**E-ISSN:** 2706-8927
**P-ISSN:** 2706-8919
www.allstudyjournal.com
IJAAS 2022; 4(4): 181-185
Received: 20-10-2022
Accepted: 26-11-2022

**रूपम कुमारी**
समाजशास्त्र विभाग, ल०ना० मिथिला विश्वविद्यालय, कामेश्वरनगर, दरभंगा, बिहार भारत

**Corresponding Author:**
**रूपम कुमारी**
समाजशास्त्र विभाग, ल०ना० मिथिला विश्वविद्यालय, कामेश्वरनगर, दरभंगा, बिहार भारत

# सूचना तकनीक, शिक्षित महिलाएँ तथा व्यावसायिक गतिशीलता

**रूपम कुमारी**

**DOI:** https://doi.org/10.33545/27068919.2022.v4.i4c.915

**सारांश:**
शिक्षित महिलाओं के लिए व्यवसायिक अवधारणा अत्यधिक लाभप्रद है। क्योंकि इससे एक तो उनको मातृत्व का दायित्व निभा पाने में परेशानी नहीं होती और दूसरा यह कि वे अपने घरों में ही रहकर काम-काज के समय मेंसे अपनी सुविधानुसार परिवर्तन कर सकती है। महिलाओं में घर बैठे ऐसे स्वरोजगार की प्रवृत्ति में वृद्धि हुई है। अतः शिक्षित महिलाओं की आर्थिक स्थिति और सशक्तीकरण में सुधार लाने के लिए यह आवश्यक है कि उन्हें व्यवसाय के अधिक से अधिक अवसर उपलब्ध कराये जाएं और ऐसा तभी सम्भव है जब विभिन्न संगठन अपने हित में महिलाओं की दक्षता का सार्थक सदुपयोग करे। भूदूमण्डलीकरण से सूचना प्रौद्योगिकी की रचना में व्यापक परिवर्तन आया है। इसके कारण केवल कल–कारखाना उत्पादन के क्षेत्र ही नहीं बल्कि सेवा क्षेत्र में राष्ट्र एवं परराष्ट्र स्तर पर क्रान्तिकारी परिवर्तन घटित हुए है। संचार और सूचना प्रौद्योगिकी की क्रान्ति ने सबसे महिलाओं की जीवन शैली को प्रभावित किया है, पारिवारिक सम्बन्धों पारम्परिक मान्यताओं और देश-विदेश में कार्यरत पारिवारिक नातेदारों से सम्बन्ध बनाने में इस प्रौद्योगिकी ने महिलाओं को संबल प्रदान किया है। इतना ही नहीं जो महिलायें पढ़-लिखकर अपना जीवन संवारना चाहती है, उन्हे भी सूचना प्रौद्योगिकी के विभिन्न माध्यमों से काफी सहायता प्राप्त हो रही है।

**कूटशब्द:** सूचना तकनीक, शिक्षित महिलाएँ, भूदूमण्डलीकरण

## प्रस्तावना

शिक्षा के कारण परिवार का दायरा विस्तृत हुआ है। परम्परागत व्यवसाय के बदले अब आधुनिक व्यवसाय का दौर प्रत्येक परिवार में चल रहा है। जिनके पिता पहले खेती करते थे, उनके लड़के अब पटना के आनन्द सर के सहयोग से सुपर-30 के जरिए आई0आई0टी0 में पढ़ रहा है। कुछ लोग पाठ्यक्रम पूरा कर अब अमेरिका, न्यूयॉर्क में इंजीनियर बनकर रोजगार कर रहा है। इस प्रकार जिस परिवार का पहला व्यवसाय था कृषि कार्य-उसका अब चमकदार व्यवसाय अभियंत्रण का हो गया है। इसी तरह जिसका पिता ठोप-चाचन लगाकर यजमान सबसे दान-दक्षिणा लेता था-उसका बेटा प्रतियोगिता परीक्षा में सफल होकर मषहूर डॉक्टर बन गया है। जिसका पिता पान की दुकान करता है-उसका लड़का पढ़-लिखकर सुप्रीम कोर्ट का मशहूर वकील हो गया है। शिक्षा के कारण व्यवसाय में परिवर्तन होता है। इसके आधार पर व्यवसाय में गतिशीलता उत्पन्न होती है। फलतः परिवार के प्रकार्यों में भी परिवर्तन होता है। जब कृषक कार्य व्यवसाय था परिवार का तो एक किसान अपने बच्चे को खेती-गृहस्थी की शिक्षा देता था। परंतु अमेरिका में कार्यरत एक इंजीनियर अपने बच्चे को शिकागो विश्वविद्यालय अथवा ऑक्सफोर्ड में पढ़ाने का प्रयास करता है। इस प्रकार पुराने परिवार तथा नए परिवार में बच्चों की शिक्षा-दीक्षा के संदर्भ में भारी परिवर्तन परिलक्षित होता है।

जब परिवार में ग्रामीण जीवन का सौरभ मौजूद था तथा लोग कुल-वंश की परंपरा का ध्यान रखते थे तो दुल्हन को आशीर्वाद देते थे-पुतो फलों, अर्थात् तुम्हारे यहाँ कई संतान हो। परंतु अब आधुनिकीकरण के दौर में दुल्हा-दुल्हन को लोग परिवार कल्याण के तकनीकों की शिक्षा देना नहीं भुलते है। परिवार हम दो हमारे दो तक सिमट कर रह गया है। स्पष्ट है कि आधुनिकीकरण तथा शिक्षा ने परिवार के दायरे में तेजी से परिवर्तन का नया दौर आरंभ किया है। परिवार बदल रहा है। परिवार के लोग बदल रहे है। परिवार का प्रकार्य बदल रहा है। देखते-देखते परिवार अब वैसा नहीं रह गया जैसा दादा-दादी के जमाने में था। अमिताभ बच्चन तथा हेमा मालिनी की एक मषहूर फिल्म है 'बागवान'। इस फिल्म को लोग अभी तक नहीं भूले है। पढ़े-लिखे परिवार में बुजुर्गों की त्रासदी को इस फिल्म में रेखांकित किया गया है। सुनहले पर्दे पर पढ़े-लिखे लड़कों के माता-पिता किस तरह दुख-दर्द में डूबे रहते है, इसका परिचय इस फिल्म में प्रस्तुत किया गया है। अतः प्रस्तुत शोध के आधार पर उत्तरदाताओं से संपर्क स्थापित किया गया है। व्यवसायिक गतिशीलता के संबंध में उनसे दो टूक सवाल किए गए है। शिक्षा तथा व्यवसायिक गतिशीलता के बीच बदलते परिप्रेक्ष्यों का अध्ययन किया गया है। संकलित तथ्यों का सारणीयन के आधार पर विश्लेषण किया गया है।

सामान्य ज्ञान अर्थात जनरल नॉलेज, आई.क्यू. आदि के दृष्टिकोण से भी सूचना प्रौद्योगिकी के विभिन्न माध्यम महिलाओं के लिए अत्यधिक उपयोगी हैं। टेलीवीजन और रेडियो शिक्षित और सामान्य शिक्षित सभी महिलाओं की ज्ञान पिपासा का समन करने में सक्षम हैं राजनैतिक, धार्मिक, वैज्ञानि , स्वास्थ्य, बेरोजगारी, आर्थिक या खेल सम्बन्धी सूचनाओं का श्रोत बन चुका टी.वी. ग्रामीण एवं नगरीय क्षेत्र की महिलाओं का सबसे बढ़ा मित्र बन चुका है।

व्यक्तिगत एवं सार्वजनिक क्षेत्र के प्रतिष्ठानों में प्रशासनिक दृष्टि से डाउन साइजिंग अपने कर्मियों की संख्या कम की जा रही है। इसलिए अब अनेक लोग अपने गृह कार्यालयों से ही (स्पेशलाइन्ड सर्विसों) विशेषीकृत सेवाओं का कार्य करना उचित समझते हैं। इसमें सामान्यतः पति-पत्नी मिलकर काम कर रहे हैं। अब कम से कम यह पुरानी कहावत अर्थहीन हो गयी है कि " घर की महिला जब घर पर ही रहे तो घर का काम ही करेगी। " आज इन नवीनतम परिस्थितियों में सूचना प्रौद्योगिकी ने पत्नी कोपति का साथ देने के लिए प्रोत्साहित किया है।

भारतीय सामाजिक व्यवस्था में सामाजिक संरचना के मूल्यांकन में स्त्री एवं पुरूष का लैंगिक आधार एक परम्परागत कारक अवश्य है किन्तु इसका निर्धारण भी प्राचीनकाल में हिन्दू सामाजिक व्यवस्था के अन्तर्गतपुरूष प्रधान पितृसत्ता के उत्पादन के सम्बन्धों के आधार पर ही हुआ।

भारतीय सामाजिक संरचना में हिन्दू समाज में पुरूषों का उच्च स्थानप्राप्त करना या स्तरीकरण में उच्च स्थिति ग्रहण करने का मुख्य कारण यह है कि प्रारम्भ से ही उनके पास आर्थिक अधिकार और उत्पादन के संसाधनों का एकाधिकार था। अतः पुरूषों ने अपने आर्थिक साम्राज्य में अपना वर्चस्व बनाये रखने के लिए महिलाओं को घर के अन्दर ही सीमित करके शारीरिक रूप से कमजोर मान लिया। हिन्दू सामाजिक संरचना इतनी जटिल है कि महिला और पुरूष की समस्या को सामाजिक व्यवस्था से अलग नहीं किया जा सकता फिर भी आर्थिक सम्बन्ध ही अधिकांशतः स्त्री और पुरूष की सामाजिक स्थिति का निर्धारण करते हैं।

यह अध्ययन प्रकार्यात्मक प्रारूप द्वारा प्रेरित महिला और पुरूष की सामाजिक स्थिति और भूमिका में प्रचलित उस प्रवृत्ति की वैधता पर प्रश्न निर्भर करता है , इसलिए अमेरिका और पूरे यूरोप की वेव यूजर्स महिलाओं की पसंद ट्रेवल रिटेल और फैमली केयर की वेबसाइट है। परन्तु भारत में उच्च आय वर्ग के 24,848 भारतीय यूजर्स के सर्वेक्षण में यह तथ्य प्रकाश में आया कि भारतीय महिलायें सर्वाधिक जॉब से सम्बन्धित वेबसाइट को विसाइट भी सम्मिलित हैं। चूंकि वेव का उपयोग मूलतः आयु के औसत पर हीजिट करती हैं।

भारतीय सामाजिक व्यवस्था में सामाजिक संरचना के मूल्यांकन में स्त्री एवं पुरूष का लैंगिक आधार एक परम्परागत कारक अवश्य है किन्तु इसका निर्धारण भी प्राचीनकाल में हिन्दू सामाजिक व्यवस्था के अन्तर्गतपुरूष प्रधान पितृसत्ता के उत्पादन के सम्बन्धों के आधार पर ही हुआ।

भारतीय सामाजिक संरचना में हिन्दू समाज में पुरूषों का उच्च स्थानप्राप्त करना या स्तरीकरण में उच्च स्थिति ग्रहण करने का मुख्य कारण यह है कि प्रारम्भ से ही उनके पास आर्थिक अधिकार और उत्पादन के संसाधनों का एकाधिकार था। अतः पुरूषों ने अपने आर्थिक साम्राज्य में अपना वर्चस्व बनाये रखने के लिए महिलाओं को घर के अन्दर ही सीमित करके शारीरिक रूप से कमजोर मान लिया। हिन्दू सामाजिक संरचना इतनी जटिल है कि महिला और पुरूष की समस्या को सामाजिक व्यवस्था से अलग नहीं किया जा सकता फिर भी आर्थिक सम्बन्ध ही अधिकांशतः स्त्री और पुरूष की सामाजिक स्थिति का निर्धारण करते हैं।

**व्यवसाय**

जीवन-यापन के लिए व्यक्ति जो कार्य करता है, वहीं उसका व्यवसाय होता है। किसी भी व्यवसाय में श्रम को धन अथवा वेतन के बदले में बेचा जाता है। व्यवसाय व्यक्ति की स्थिति का निर्धारण करता है। किसी औपचारिक व्यवसाय में व्यक्ति के पास जो पद होता है या उसे जो आर्थिक या अन्य प्रकार का लाभ प्राप्त होता है, वह उसकी प्रतिष्ठा को निर्धारित करता है।

**व्यावसायिक वर्गीकरण**

विभिन्न प्रकार के पेशों का वर्गीकरण एक कठिन काम है। किसी एक पेश में तनख्वाह केन्द्रबिंदु में होती है, तो किसी अन्य पेशे मे श्रमिक की शैक्षणिक योग्यता, तो फिर किसी और में विभिन्न पदों से जुड़े श्रमिकों के अधिकार एवं शक्तियाँ। पेशों का कोई सामान्य वर्गीकरण संभव नहीं है, क्योंकि विभिन्न पेशों के साथ विभिन्न समाजों में अलग-अलग सामाजिक प्रतिष्ठा जुड़ी हुई होती है। पेशों की प्रतिष्ठा में समय के साथ प्रत्येक समाज के अंदर बदलाव भी आता रहता है। चूँकि, पेशों के वर्गीकरण की कोई निश्चित कसौटी नहीं है इसलिए पेशों के सोपानिक वर्गीकरण में स्वाभाविक रूप से पक्षपात आ ही जाता है।

**व्यावसायिक परिवार**

वह परिवार, जिसके सदस्य परंपरा के अनुसार अपने पिता या पूर्वजों के व्यवसाय को अपनाते है और वहीं जीविका का प्रमुख साधन होता है। उदाहरणार्थ लुहार परिवार एवं स्थिरता को बनाए को बनाए रखने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

**व्यावसायिक समूह**

वह समूह, जिसकी सदस्यता समान व्यवसाय पर आधारित होती है। इस समूह में कुछ सामान्य उद्देश्यों, मान्यताओं के साथ-साथ सामान्य रूचियों के प्रति जानकारी और व्यवसाय करनेवालों के साथ अभिन्नता की भावना होती है।

**व्यावसायिक गतिशीलता**

व्यक्तियों द्वारा अपनी नौकरी या व्यवसाय बदलने की प्रवृत्ति व अवसर अर्थात् एक पेशे को छोड़कर दूसरे पेशे में जाना। व्यावसायिक गतिशीलता औद्योगिक व सामाजिक दोनों प्रकार के परिवर्तनों के कारण हो सकती है। यह व्यवसायों और उद्योग के भीतर व बाहर दोनों प्रकार से हो सकती है। व्यावसायिक गतिशीलता आधुनिक समाज की विशेषता है।

**व्यावसायिक प्रतिष्ठा**

व्यावसायिक प्रतिष्ठा इस बात पर निर्भर करती है कि समाज भिन्न-भिन्न व्यवसायों का किस प्रकार मूल्यांकन करता है। प्रत्येक समाज में भिन्न-भिन्न व्यवसायों की अलग-अलग प्रतिष्ठा होती है। लोग किसी व्यवसाय को किसी नजरिए से देखते है, उसे कितना तरजीह देते है, इस बारे में काफी फर्क होता है। आमतौर पर किसी व्यवसाय की प्रतिष्ठा के बारे में लोगों के विचार ज्ञात करने के लिए समाजशास्त्री यह पूछता है कि वे किसी व्यवसाय की सामान्य स्थिति का मूल्यांकन किसी प्रकार करते है। इस प्रश्न क द्वारा व्यावसायिक प्रतिष्ठा को मापा जाता है और इसी के आधार पर समाज में किसी भी व्यवसाय या पेशे की सामाजिक प्रतिष्ठा की गणना की जाती है।

**व्यावसायिक पृथक्करण**

प्रत्येक देश में जाति, प्रजाति, समुदाय एवं धर्म के आधार पर पेषागत भिन्नताएँ देखने को मिलती है, जैसे-भारत में चीक एवं कसाई गोश्त का रोजगार करते है, तो मछुआ मछली का रोजगार करता है। सिलाई के क्षेत्र में मुसलमानों की अधिकता है, तो आभूषण के कामों में सोनार जाति की बहुलता है। सिक्ख व्यवसाय और उत्पादन में अधिक देखे जाते है, तो बंगाली समुदाय के लोग नौकरी अधिक करना पसंद करते है। पाश्चात्य देशों में भी विदेशी नागरिक श्रमिक के रूप में अधिक देखे जाते है। विभिन्न पेशों के बीच पृथक्करण की प्रवृत्ति सिर्फ जाति, प्रजाति और धर्म के आधार पर ही देखने को नहीं मिलती, बल्कि लिंग के आधार पर भी यह प्रवृत्ति पायी जाती है।

**व्यावसायिक समाजीकरण**

किसी व्यवसाय में दक्षता प्राप्त करना या उस व्यवसाय से जुड़ी आवश्यक मनोवृत्तियों और व्यवहारों को सीखना ही व्यावसायिक समाजीकरण है। व्यावसायिक समाजीकरण प्रशिक्षकों, सहकर्मियों एवं दोस्तों से आमतौर पर संभव होता है। लेकिन, साथ ही साथ श्रमिक अपने कार्यों में भी सीखने को अवसर प्राप्त करते है।

**व्यावसायिक संरचना**

किसी देश की अर्जक जनसंख्या को विभिन्न व्यवसायों या पेशों के अनुसार भिन्न-भिन्न वर्गों में बाँट कर दिखाना। इसके अंतर्गत हम उन बातों का अध्ययन करते है, जिनके संपूर्ण व्यावसायिक ढाँचा निर्मित होता है।

**व्यवसायिक निरंतरता**

एम०एन० श्रीनिवास ने कार्य तथा आर्थिक जीवन की व्याख्या की है। उनके अनुसार आधुनिक समाजों में आर्थिक व्यवस्था की एक स्पष्ट तथा महत्त्वपूर्ण विशेषता एवं बहुमुखी श्रम विभाजन पर आधारित है। वस्तुतः कार्य जीवन निर्वाह की अर्थव्यवस्था से जुड़ा हुआ है। कामगारों के लिए आर्थिक पक्ष प्रबल होता है। मजदूरी, वेतन भत्ता तथा आर्थिक सुरक्षा कामगाररों को सबल बनाती है। श्रमिक संगठन, हड़ताल, तालाबंदी, औद्योगिक विवाद तथा अन्य संकट का महत्त्वपूर्ण आधार आर्थिक पक्ष से जुड़ा होता है। मैक्स वेबर, बेकर तथा अन्य समाज वैज्ञानिकों ने भी कार्य के आर्थिक पक्ष के महत्त्व को स्वीकार किया है। कार्य के अर्थशास्त्रीय आयाम के अंतर्गत श्रम विभाजन तथा विशेषीकरण का उल्लेख किया जा सकता है। कार्य के साथ वैज्ञानिक पबंधन जुड़ा हुआ है। वैज्ञानिक प्रबंधन के आधार पर उत्पादन में वृद्धि की जा सकती है। व्यापक

उत्पादन के आधार पर व्यापक आर्थिक लाभ प्राप्त किया जा सकता है। औद्योगिक क्रांति तथा औद्योगीकरण की प्रक्रिया ने उत्पादन की पद्धति को एक व्यवस्थित आधार प्रदान किया है। इस दौर में वैज्ञानिक प्रबंधन के जरिए कार्य की प्रणाली को एक नई दिषा दी गयी। कारखानों का विकास हुआ तथा कामगारों को नियमित वेतन, मजदूरी एवं अन्य आर्थिक लाभ प्रदान करने की व्यवस्था की गयी। औद्योगिक समाजशास्त्र के अंतर्गत कार्य के आर्थिक परिप्रेक्ष्य के संदर्भ में प्रश्न खड़े किए गए। कतिपय शोध अध्ययनों के आधार पर नए तथ्यों का प्रतिपादन किया गया। मजदूरों के आर्थिक शोषण के मुद्दे को रेखांकित किया। वर्ग विभेद के प्रश्नों पर चर्चा की गयी। कामगारों के आर्थिक शोषण के मुद्दे को रेखांकित किया। वर्ग विभेद के प्रश्नों पर चर्चा की गयी। कामगारों के वतन और भत्ते को लेकर प्रश्न खड़े किए गए। कामगारों की छंटनी तथा मिलों की तालाबंदी के मुद्दों को उठाया गया। कामगारों के अलगाव तथा अन्य संबंधित पक्षों का प्रस्तुत किया गया। कार्य का आर्थिक परिप्रेक्ष्य एक महत्त्वपूर्ण मुद्दा रहा है। यह जीवन निर्वाह की अर्थव्यवस्था तथा रोजी-रोटी के मुद्दे से जुड़ा हुआ है। भूमंडलीकरण तथा सूचनाक्रांति ने कार्य के दायरे को विस्तृत किया है। फलतः कार्य के आर्थिक पक्ष का भी विस्तार हुआ है।

डब्ल०ई०मूर ने इंडस्ट्रियल रिलेषंस एंड द सोष्यल ऑर्डर ने कामगारों के आर्थिक पक्ष तथा कार्य की दषाओं को रेखांकित किया है। फ्रीडमान ने अपनी कृति इंडस्ट्रियल सोसाइटी में औद्योगिक समाज तथा कार्य के आर्थिक परिप्रेक्ष्य का व्यवस्थित अध्ययन किया। अमेरिकी इंजीनियर टेलर ने 'काम के वैज्ञानिक संगठन' के आंदोलन की शुरुआत की। फोर्ड जैसे उत्पादकों ने कार्य के वैज्ञानिक संगठन के आधार पर उद्योगों के परिक्षेत्र को एक नया स्वरूप प्रदान किया। इस संदर्भ में एल्टन मेयो की भी चर्चा की जा सकती है। विश्लेषणों के आधार पर स्पष्ट होता है कि वर्तमान संदर्भ में कार्य के आर्थिक परिप्रेक्ष्यों का विशेष महत्त्व होता है। भूमंडलीकरण के दौर में कामगारों के आर्थिक हितों के प्रबंधन पर ध्यान केन्द्रीत किया जा रहा है। सूचना क्रांति तथा आर्थिक उदारीकरण ने रोजगार के कई अवसरों को उत्पन्न किया है। फलतः कार्य के आर्थिक परिप्रेक्ष्य को एक नई दिषा प्राप्त हुई है।

एंथोनी गिडेन्स ने स्पष्ट किया है कि व्यवसायिक गतिशीलता के बावजूद व्यवसायिक निरंतरता का अनुभव किया जा सकता है। स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान खादी आंदोलन के जरिए बुनकरों के व्यवसाय को एक उचाई प्राप्त हुई थी। स्वाधीन भारत में भी खादी के वस्त्रों पर ध्यान केन्द्रित किया गया। आज भी अधिकतर विधान सभा तथा लोक सभा के सदस्य खादी वस्त्रों का उपयोग करते है। आम जनता भी बुनकरों के हाथों से बने हुए वस्त्रों के उपयोग में अभिरूचि लेती है। गरमी के मौसम में बुनकरों द्वारा तैयार किया गया वस्त्र सुखद तथा आनंददायक सिद्ध होता है। इसी तरह जाड़े के दिनों में भी बुनकरों के वस्त्रों को लोग पसंद करते है। हाथ से बने हुए कंबलों की बिक्री भारी संख्या में होती है। इस प्रकार बुनकरों के व्यवसाय में निरंतरता मौजूद है।

## व्यवसायिक परिवर्तन

मैकाइवर तथा पेज ने अपनी पुस्तक 'सोसाइटी' में स्पष्ट किया है कि समाज बदलता है। समाज एक निरंतर परिवर्तनषील अवधारणा है। जाहिर है परिवर्तन का प्रभाव बुनकरों के व्यवसाय पर भी परिलक्षित होता है। समाजशास्त्री सोरोकिन ने सामाजिक सांस्कृतिक गतिशीलता के आधार पर परिवर्तन की अवधारणा को रेखांकित किया है। उनके अनुसार समाज बदलता है क्योंकि परिवर्तन एक स्वाभाविक प्रक्रिया है। समाज में परिवर्तन के तत्त्व निहित है। एमाइल दुर्खाइम ने श्रम विभाजन तथा विषेषीकरण की प्रक्रिया के आधार पर सामाजिक परिवर्तन की व्याख्या की है। उनके अनुसार जनसंख्या के घनत्व एवं आकार के आधार पर श्रम विभाजन का विस्तार होता है तथा विषेषीकरण में वृद्धि होती है। समाजशास्त्र के संस्थापक अगस्त कोंत के अनुसार ज्ञान के विकास के कारण समाज में परिवर्तन होता है। कार्ल मार्क्स ने वर्ग संघर्ष के सिद्धांत के आधार पर समाज में परिवर्तन की अवधारणा को स्पष्ट किया है। हरबर्ट स्पेन्सर ने उद्विकास के सिद्धांत के आधार पर सामाजिक परिवर्तन की अवधारणा को रेखांकित किया है। जाहिर है कि समाज की व्याख्या परिवर्तन के बिना संभव नहीं है। इसी तरह व्यवसाय की व्याख्या भी परिवर्तन के बिना संभव नहीं है। बुनकरों के व्यवसाय में भी परिवर्तन परिलक्षित होता है। बुनकर व्यवसाय से संबंधित तकनीकों, उत्पादन शक्ति, उत्पादन प्रक्रिया तथा विपरण आदि में परिवर्तन के आयाम को देखा जा सकता है। विशेष तौर पर बुनकरों के व्यवसाय में आधुनिकीकरण के आधार पर परिवर्तन हो रहा है। आधुनिकीकरण उत्पादन के क्षेत्र में हो रहा है। तकनीकों के परिष्कार के जरिए भी आधुनिकीकरण की प्रक्रिया जारी है। विपरण के क्षेत्र में व्यापक पैमाने पर आधुनिकीकरण का अनुभव किया जा सकता है। इससे पूर्व की व्यवसायिक परिवर्तन की व्याख्या की जाए, परिवर्तन तथा आधुनिकीकरण के बीच मौजूद संबंधों का विश्लेषण समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य में अपेक्षित है।

## निष्कर्ष:

सामाजिक पुनर्निमाण में महिलाओं की भूमिका और आधुनिक महिलाओं के निर्माण में समाज की भूमिका दोनों ही विषय एक दूसरे के परिपूरक हैं। जब हम समाज के पुनर्निमाण में महिलाओं की भूमिका की बात करते हैं तो सबसे पहली बात मस्तिष्क में टकराती है वह यह कि ब्रह्म सत्य क्या है ? हमारे देश में लिखित रूप में तो संविधान को माना गया है लेकिन जैसे-जैसे वास्तविकता सामने आती हैं संविधान और उसके व्यवहारिक स्वरूप में खाई कम होती रहती है। मूलतः ऐसा लगता है कि भारत जितना प्रोग्रेसिव और उदारवादी संविधान दुनिया में कहीं नहीं है और उसमें महिलाओं, दलितो व सभी पिछड़े हुए वर्गों को सम्पूर्ण अधिकार दिये गये हैं।

ऐसे कानून हैं जो महिलाओं की सुरक्षा उनकी आर्थिक और सामाजिक प्रगति का पूरा का पूरा उत्तरदायित्व राज्य के कन्धों पर देता है किन्तु सामाजिक व्यवहार में राज्य और उसकी विभिन्न एजेन्सियां महिलाओं की भूमिका के प्रति परम्परागत रूप से मौन रहती है।

**संदर्भ**


1. श्रीनिवास, एम0एन0, 2002, सोशल चेंज इन मॉर्डन इंडिया, ओरियन्ट लॉग्मैन, नई दिल्ली, पृ0 25
2. डब्ल0ई0मूर, 1995, इंडस्ट्रियल रिलेशंस एंड द सोशल ऑर्डर, पृ0 60
3. फ्रीडमान, 2002, इंडस्ट्रियल सोसाइटी, पृ0 150
4. गिडेन्स, एंथोनी, 1990, द कन्सीक्युन्स ऑफ मोर्डनीर्टी, पोलिटी, कैम्ब्रिज, पृ0 14
5. मैकाइवर तथा पेज, 1990, सोसाइटी, मैकमिलन, पृ0 14